ओ३म् ॥

न मणिमाला

प्रणेता —

वेदवागीश, व्याख्यान वाचस्पति
पूज्यपाद श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

इस पुस्तक की छपायी के लिये १५०) रुपये
आर्य स्त्री समाज बाँस मण्डी मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
ने प्रदान किये।

वेद कल्याणकारी है

प्रकाशक—

वैदिक संस्थान : नजीबाबाद–२४६७६३
उत्तर प्रदेश

मकर संक्रान्ति २०३९ विक्रमी
१४ जनवरी सन् १९८३ ईसवी

प्रथमावृत्ति
२४००

मूल्य –
एक रुपया

मुद्रक –
सुरेन्द्र [इलै०] प्रिंटिङ्ग प्रेस
नजीबाबाद–२४६७६३

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर नाम मणिमाला

परमात्मा क्योंकि अनन्त और असीम है अतएव उसके गुण-कर्म-स्वभाव भी अनन्त और असीम ही हैं। न तो परमात्मा का कहीं अन्त है और न सीमा एतदर्थ उसके गुण-कर्म-स्वभाव का भी न कहीं अन्त ही सम्भव है और न सीमा ही। सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय तथा जीवों के कर्म-फलों की व्यवस्था सम्बन्धी उसके कर्म अनन्त और असीम हैं तथा ठीक इसी प्रकार उस अनन्त और असीम कर्मा परमपिता परमात्मा के स्वभाव का भी न कहीं अन्त ही मिलेगा और न सीमा ही। फिर; जिसके कर्म और स्वभाव अनंत और असीम हैं, उसके गुण तो अन्त वाले और सीमाबद्ध हो ही कैसे सकते हैं? कारण यह कि अनन्त सृष्टि की उत्पत्ति, उसकी स्थिति अर्थात् इसे धारण कर इसकी व्यवस्था तथा असंख्य जीवों के शुभ-अशुभ कर्मों की व्यवस्था करना तथा अन्त को प्रलय और महाप्रलय कर समस्त सृष्ट पदार्थों को

उनके वास्तविक स्वरूप — अप्रकेत सलिल, न जाने जा सकने योग्य — द्रव अवस्था तक ले जाने तथा पुनः सत्-रज्-तम् के परमाणुओं का निर्माण, परमाणुओं से अणुओं, द्व्यणुकों तथा तत्पश्चात् त्रसरेणुओं का निर्माण और त्रसरेणुओं से अग्नि, वायु जल तथा पृथिवी आदि भूगोलों का बनाना ऐसे कार्य हैं, जो किसी सीमित और सान्त गुण-कर्म-स्वभाव वाले तत्त्व तथा शक्ति के द्वारा सम्भव ही नहीं।

क्योंकि परमात्मा अनन्त और असीम गुण-कर्म-स्वभाव वाला है इसलिये उसके अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव में से प्रत्येक से सम्बन्धित पृथक्-पृथक् नाम भी व्यवहारिक रूप से सम्भव होने से असंख्य ही हैं।

श्रद्धालु जनों की जानकारी और अध्यात्म लाभ की दृष्टि से समुद्र में से एक बूंद की भाँति अनन्त और असीम गुण-कर्म-स्वभाव वाले उस परमात्मा के असंख्य नामों में से केवल १०८ नाम अर्थ सहित इस पुस्तिका में दिये जाते हैं। पाठक गण ध्यान पूर्वक पढ़ें, समझें तथा आनन्द लाभ प्राप्त करें।

१. ओ३म् = रक्षा करने वाला। अ+उ+म् इन तीन अक्षरों से मिलकर ओ३म् पद बना है। 'अ' का अर्थ है उत्पादन, प्रकटीकरण, प्रारम्भ अर्थात् जो सृष्टि की उत्पत्ति, प्रकटीकरण, प्रारम्भ करता है, उस परम-

पिता का मुख्य नाम ओ३म् है ।

'उ' का अर्थ है निश्चित रूप से। 'उ' वितर्के अर्थात् निश्चयपूर्वक वही परमात्मा इस सृष्टि की उत्पत्ति करता है तथा सर्वव्यापक होने के कारण सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में रहकर इस सम्पूर्ण सृष्टि की व्यवस्था का सञ्चालन भी करता है और अन्त में वही परमदेव इस का 'म' अवसाने अर्थात् अवसान, समाप्ति, प्रलय भी करता है, इन कारणों से ईश्वर का नाम ओ३म् है। यही कारण है कि यह 'ओ३म्' परमात्मा का मुख्य नाम भी है तथा अन्य सब नाम भी इसी के अन्तर्गत आ जाते हैं और इसी एक 'ओ३म्' पद से सिद्ध हो जाते हैं।

२. खम् = 'ख' का अर्थ है आकाश । जैसे आकाश सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ में व्यापक है, इसी प्रकार सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ तथा साथ ही आकाश में और यहाँ तक कि जीवात्मा में भी व्यापक होने से परमात्मा 'खम्' नाम से भी जाना जाता है ।

३. ब्रह्म = महतो महान् अर्थात् बड़े से भी बड़ा होने के कारण सबसे बड़ा तथा सबसे महान् होने के कारण परमात्मा का नाम 'ब्रह्म' है।

४. अग्नि= तेज स्वरूप, प्रकाश स्वरूप तथा ज्ञान स्वरूप होने के कारण परमात्मा का नाम 'अग्नि' है। संसार के समस्त प्रकाशमान पदार्थ सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, विद्युत आदि उसी परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित हैं अतएव वह अग्नि है। इसके अतिरिक्त संसार में जितना भी ज्ञान-विज्ञान है, वह उसी प्रभु की देन है इसलिये सम्पूर्ण ज्ञान का केन्द्र, समग्र ज्ञान का भण्डार अर्थात् ज्ञानमय होने के कारण वह अग्नि है।

५. मनु= मननशील, विचारवान होने के कारण वह 'मनु' है। वह सम्पूर्ण ज्ञान का केन्द्र अर्थात् 'ज्ञानमय' होने के कारण 'अग्नि' तो है ही किन्तु सर्व प्रज्ञानमय भी है अर्थात् प्रत्येक विषय के ज्ञान के प्रज्ञान, प्रकर्ष के ज्ञान—प्रत्येक विषय के ज्ञान के प्रकर्ष, चरम उत्कर्ष, चरम सीमा तक के विवेचन और विश्लेषण का — उसके विज्ञान का भी जानने वाला होने से उसका एक नाम 'मनु' है।

६. प्रजापति= सब का पालन करने वाला होने के कारण वह परमात्मा 'प्रजापति' है। प्रजा+पति=प्रजा का पति; प्रजा का पालन-रक्षण करने वाला होने से वह 'प्रजापति' कहलाता है।

७. इन्द्र= इन्द्र का अर्थ है ऐश्वर्याधिपति। संसार के समस्त ऐश्वर्यों का अधिपति, स्वामी होने के कारण वह परमैश्वर्यवान् है अतः उसका नाम 'इन्द्र' भी है।

८. प्राण= सब का जीवन-मूल, सब के जीवनों का जीवन अर्थात् अखिल जीवन का आधार होने से वह 'प्राण' नाम से जाना जाता है।

९. ब्रह्मा= सम्पूर्ण जगत् का निर्माता, अखिल विश्व, विश्व ब्रह्माण्ड का रचयिता, बनाने वाला होने से परमात्मा का नाम 'ब्रह्मा' है।

१०. विष्णु= समस्त चर और अचर अर्थात् सम्पूर्ण चेतन और जड़ जगत् में व्यापक होने से वह ईश्वर 'विष्णु' है।

११. महेश= महा+ईश अर्थात् बड़ा शासक (महा=बड़ा, ईश = शासक) संसार के किसी भी, किसी एक शासक से बड़ा नहीं अपितु विश्व के सभी शासकों के सामूहिक शासन से भी बड़े शासन का शासक, अखिल विश्व का, सम्पूर्ण सृष्टि का शासक तथा यहीं तक नहीं अपितु सृष्टि न रहने, प्रलय हो जाने पर सृष्टि के उपादान कारण प्रकृति और असंख्यों जीवा-त्माओं पर भी अपनी सर्व व्यापकता तथा व्यापक

शक्तियों के द्वारा शासन करने अर्थात् प्रलय काल की भीशासन-व्यवस्था बनाये रखने के कारण वह महा शासक, महा+ईश 'महेश' है।

१२. शिव= शिव का अर्थ है कल्याण करने वाला। संसार के सभी प्राणियों का कल्याण, भलाई करने वाला होने से उस परमात्मा को 'शिव' कहते हैं।

१३. रुद्र= रुद्र शब्द का अर्थ है रुलाने वाला। दुष्कर्मी लोग परमात्मा की न्याय-व्यवस्था से दण्ड पाते हैं तो रोते हैं अतः इस प्रकार दुष्टों को दण्ड देकर रुलाने वाला होने से परमात्मा को 'रुद्र' कहते हैं।

१४. अक्षर= उस परमपिता का कभी भी, किसी भी काल में 'क्षर' विनाश 'अ' नहीं होता। वह सदा-सर्वदा तीनों कालों में रहने के कारण अविनाशी है एतदर्थमेव उसका एक नाम 'अक्षर' है।

१५. स्वराट्= स्वयं राजता, विराजता अर्थात् विविध प्रकार से अपने ही गुणों के कारण तथा अपने कार्यकलापों से प्रकाशित और प्रगट हो रहा है अत. वह 'स्वराट्' है।

१६. कालाग्नि= जैसे अग्नि सब को जलाकर भस्म कर देती

है, इसी प्रकार समस्त चराचर जगत् को प्रलय के द्वारा नष्ट कर देने वाला होने से वह परम् पावन तथा परम् शक्तिशाली प्रभु 'कालाग्नि' है।

१७. सुपर्ण= संसार का अपनी उत्तम व्यवस्थाओं के द्वारा जो पालन कर रहा है तथा जो पूर्णकाम है अर्थात् जिसके कर्यों में कहीं भी, किसी भी प्रकार की कमी नहीं, वह परमात्मा सुपर्ण नाम वाला है।

१८. दिव्य= जिसके कारण संसार के दिव्य पदार्थों में दिव्यता, देदीप्यमानता, प्रकाश और कान्ति (चमक) है अर्थात् सम्पूर्ण प्रकाश और सम्पूर्ण दिव्यताओं, गुणों, अच्छाइयों का केन्द्र और मूलाधार होने से परमात्मा 'दिव्य' नाम वाला है।

१९. गरुत्मान्= जिसका 'आत्म' अर्थात् 'निज' स्वरूप गुरुत्व से परिपूर्ण हो, उसे 'गरुत्मान्' कहते हैं। परमात्मा तो गुरुत्व का, वड़प्पन का केन्द्र है। उससे अधिक गुरुत्व, वड़प्पन, गरिमा तथा गम्भीरता अन्य किसी में सम्भव ही नहीं इसलिये वही और एक मात्र वही 'गरुत्मान्' है।

२०. मातरिश्वा= मातरिश्वा वायु को कहते हैं। जो वायु

की भाँति शक्तिशाली हो, उसे भी 'मातरिश्वा' कहते हैं। परमात्मा न केवल वायु की भांति शक्तिशाली है अपितु उससे बढ़कर शक्तिशाली अन्य कोई है ही नहीं। वही-और एक मात्र वही समस्त शक्तियों का केन्द्र है एतदर्थ उसका एक नाम 'मातरिश्वा' भी है।

२१. विराट्= विविध प्रकार के इस जड़ और चेतन जगत् को प्रकाशित तथा प्रगट करने से उस परमपिता का नाम 'विराट्' है।

२२. विश्व= जिस परमात्मा में समस्त चराचर जगत् स्थित है और जो व्यापक होने के कारण जगत् के सम्पूर्ण पदार्थों में प्रवेश किये हुए है। वह परमात्मा अपने इन जगत् को धारण करने और जगत् के प्रत्येक पदार्थ में ओत-प्रोत् हुआ रहने के गुणों के कारण वेदादि सत्य शास्त्रों में 'विश्व' नाम से वर्णन किया गया है।

२३. हिरण्यगर्भ= सूर्य आदि तेज अर्थात् गर्मी, प्रकाश, चमक वाले समस्त पदार्थ उस परमात्मा के आधार पर और उसी में स्थित हैं तथा सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी यह समस्त तेज उसी में स्थित था अतएव इस सम्पूर्ण तेज को अपने में धारण किये रहने तथा रखने के

कारण और इस प्रकार सम्पूर्ण तेज का मूलाधार, कोष तथा केन्द्र होने के कारण उस परमात्मा का सत्-शास्त्रों में एक नाम 'हिरण्यगर्भ' भी है।

२४. वायु= समस्त प्राणी और अप्राणी अर्थात् चेतन और जड़ जगत् में सबसे अधिक बलशाली होने के कारण तथा सम्पूर्ण जगत् का धारण, सञ्चालन और प्रलय करने वाला होने के कारण वैदिक साहित्य में ईश्वर का नाम 'वायु' भी है।

२५. तैजस्= स्वयं प्रकाशित होने अर्थात् प्रकाश स्वरूप होने और अपने कार्यों द्वारा प्रकट होने तथा सूर्य आदि तेज वाले लोकों का प्रकाश करने (बनाने) वाला होने से परमात्मा को शास्त्रों ने तैजस् भी कहा है।

२६. ईश्वर= सत्य विचार, शील, ज्ञान और ऐश्वर्याधिपति, सृष्टि का रचने वाला तथा (ईश=शासक) संसार के समस्त शासकों में 'वर' वरण करने, चुने जाने, सबसे श्रेष्ठ होने के कारण परमात्मा का नाम 'ईश्वर' है।

२७. आदित्य= जिसके खंड, टुकड़े अर्थात् विनाश कभी न हो ऐसा होने के कारण उस परमात्मा को 'आदित्य' कहते हैं।

२८. प्राज्ञ= भ्रान्तिरहित अर्थात् सत्य ज्ञान वाला होने के कारण समस्त चराचर जगत् के व्यवहार को — जब जैसा वह होता है — ज्यों का त्यों जानता है, इस से उस ईश्वर का नाम 'प्राज्ञ' है।

२९. मित्र= सब से स्नेह करने वाला और सब के द्वारा स्नेह किये जाने योग्य होने से वह परमात्मा 'मित्र' नाम से जाना जाता है।

३०. वरुण= सबसे श्रेष्ठ होने तथा वरण किये जाने, पसन्द किये जाने, चुने जाने योग्य होने के कारण उस परम पावन प्रभु का नाम 'वरुण' है।

३१. अर्यमा= सत्य न्याय करने वाले मनुष्यों का मान करने वाला तथा पाप और पुण्य करने वालों को पाप-पुण्य के फलों की ठीक-ठीक ज्यों की त्यों नियमानुसार व्यवस्था करने वाला होने के कारण उस परमपिता को 'अर्यमा' कहते हैं।

३२. बृहस्पति= बड़े से भी बड़ा (बृहद्) और बड़े से भी बड़े पदार्थों तथा महान् और अनन्त आकाश आदि तत्वों से भी महान् और इन सब का भी पति = स्वामी होने से उस प्रभु का नाम (बृहद् + पति,

बृहः+पति) 'बृहस्पति' है ।

३३. उरुक्रम= 'उरु' अर्थात् महान् 'क्रम' पराक्रम वाला होने के कारण से उस परमपिता परमेश्वर को 'उरुक्रम' नाम से जाना जाता है ।

३४. सूर्य= प्राणी और अप्राणी अर्थात् चेतन और जड़ — जितना भी यह जगत् है — इस सब का आत्मा अर्थात् इस सम्पूर्ण जगत् के अस्तित्व का आधार तथा स्व प्रकाश स्वरूप और सब का प्रकाशक होने से वह परमात्मा 'सूर्य' नाम वाला है ।

३५. आत्मा= समस्त जीव आदि जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'आत्मा' है । "अतति सर्वत्र व्याप्नोति" अर्थात् वह सर्वत्र, सब स्थानों पर और सब पदार्थों में व्याप रहा है इसलिये उस का नाम 'आत्मा' है ।

३६. परमात्मा= वह जीव आदि सबसे उत्कृष्ट अर्थात् उच्च-कोटि का, जीव, प्रकृति तथा आकाश से भी अति सूक्ष्म और सब जीवों का अन्तर्यामि आत्मा है इसलिये उसे 'परमात्मा' नाम से पुकारा जाता है ।

३७. परमेश्वर= सामर्थ्यवान् तथा शासक को ईश कहते हैं, जो सामर्थ्यवानों तथा शासकों में श्रेष्ठ होता है, उसे

ईश्वर कहते हैं और जिसमें ज्ञान-बल आदि सामर्थ्यों की पराकाष्ठा, चरम अवस्थिति हो, उसे 'परमेश्वर' कहते हैं। परमात्मा क्योंकि सब प्रकार के ज्ञान-बल आदि सामर्थ्यों का अधिपति है। संसार के अन्य पदार्थ और मनुष्य आदि प्राणी सामूहिक रूप से मिलकर भी जितना सामर्थ्य रखते हैं, उससे भी अधिक सामर्थ्य वाला वह परमात्मा है। संसार के समस्त शासकों के सम्पूर्ण शासन से भी बड़ा शासन उस का है अर्थात् एकमात्र वह परमात्मा ही ऐसा है कि जिसका सामर्थ्य और शासन पराकाष्ठा वाले हैं। उस जैसा शासक तथा सामर्थ्यवान् न कभी कोई हुआ है न अब है और न भविष्य में कभी होना संभव है। यही कारण है कि उसका नाम 'परमेश्वर' भी है।

३८. सविता= समस्त जगत् का प्रसविता अर्थात् प्रसव करने, जन्म देने, उत्पन्न करने वाला होने के कारण उस परमात्मा को 'सविता' नाम से पुकारते हैं।

३९. देव= स्वयं निर्लिप्त रहता हुआ समस्त जगत् को खेल खिला रहा है। धार्मिकों को जिताने की इच्छा, प्रवृत्ति तथा स्वभाव से युक्त है। सब चेष्टाओं के साधनों और उपायों का दाता है। स्वयं प्रकाश स्वरूप तथा सब का प्रकाशक है। प्रशंसा के योग्य है। स्वयं

आनन्दस्वरूप और दूसरों को आनन्द देने वाला है। मदोन्मत्तों (घमण्ड से चूर और उदण्ड प्रकृति वालों) को दण्ड देने वाला है। सबके शयन के लिये रात्रि का बनाने वाला तथा प्रलय का कर्त्ता है। कामना करने योग्य तथा तेजयुक्त है। ज्ञान का भण्डार और ज्ञान स्वरूप है।

वह अपने स्वरूप में स्थित रह कर आनन्द पूर्वक आप ही सृष्टि की रचना करता है। अन्य किसी की सहायता के विना क्रीड़ावत् अर्थात् जैसे बच्चे खेलते हैं, ऐसे ही सहज स्वभाव से सब जगत् को बनाता है और प्रकृति की तथा सृष्टि में सभी प्राणियों की क्रीड़ाओं का आधार है।

सब को जीतने वाला, स्वयं किसी से न जीता जाने वाला है। न्याय और अन्याय रूप व्यवहारों का यथावत् जानने वाला तथा आदि सृष्टि में ही उन का उपदेश कर देने वाला है। सब मनुष्यों के द्वारा प्रशंसा के योग्य है। स्वयं तो आनन्द स्वरूप है ही, अन्यों को भी आनन्द कराने वाला है। सदा हर्षित करने वाला तथा दुःखों से पृथक् रहने वाला और दूसरों को भी दूर रखने वाला है।

प्रलय का समय आने पर अव्यक्त अर्थात् मूल प्रकृति में सब जीवों को सुलाता है। उसके सब सामर्थ्य और कार्य सत्य हैं तथा उसकी प्राप्ति की कामना सभी शिष्ट जन करते हैं। वह सब में व्यापक होने के कारण सब कुछ जानता है तथा सबके द्वारा जानने और सब को प्राप्त होने के योग्य है। इन सब गुणों से युक्त होने के कारण समस्त वेद आदि सत्-शास्त्रों में उस परमात्मा का नाम 'देव' है।

४०. कुवेर= व्यापक होने के कारण सब पर छाये रहने, सब का आच्छादन करने से उस परमेश्वर का नाम 'कुवेर' है।

४१. जल= दुष्टों को दण्ड देता और प्रकृति के परमाणुओं का परस्पर संयोग तथा वियोग करता है इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'जल' है।

४२. आकाश= सब ओर से जगत् का प्रकाशक होने के कारण वह 'आकाश' कहलाता है।

४३. अन्न= सबको अपने भीतर रखने के कारण उस परमात्मा का नाम 'अन्न' है। जैसे गूलर में कृमि उत्पन्न होकर उसी में रहते और उसी में नष्ट हो जाते हैं,

इसी प्रकार परमेश्वर के भीतर ही सब जगत् की स्थिति और अवस्था है ।

४४. अन्नाद= सब को ग्रहण करने योग्य होने के कारण वह 'अन्नाद' नाम से भी जाना जाता है ।

४५. अत्ता= समस्त चर और अचर जगत् का ग्रहण करने वाला होने से वह 'अत्ता' नाम से जाना जाता है ।

४६. वसु= सब जड़-चेतन जगत् उस परमात्मा में ही निवास करता है और वह परमात्मा भी सर्वव्यापक होने से समस्त जड़-चेतन में बस रहा है अतः उसका नाम 'वसु' है ।

४७. नारायण= जल और जीवों को को 'नारा' कहते हैं तथा समस्त जीव और जल उस परमपिता परमात्मा के 'अयन' अर्थात् निवास के स्थान हैं इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'नारायण' है ।

४८. चन्द्र= सबको आह्लाद, प्रसन्नता, प्रफुल्लता और आनन्द प्रदान करने वाला होने से परमात्मा का नाम 'चन्द्र' अथवा 'चन्द्रमा' भी है ।

४९. मङ्गल= अपने आप में वह मङ्गल अर्थात् शुभ स्वरूप है तथा सब जीवों के मङ्गल का कारण भी है अतएव

उसे 'मङ्गल' नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

५०. बुध= स्वयं बोध स्वरूप, ज्ञान स्वरूप है और सब जीवों के लिये भी बोध (ज्ञान) का कारण है। सृष्टि के प्रारम्भ में ही जीवों के कल्याणार्थ ज्ञान (वेद) प्रदान करता है इसलिये उस परमदेव का नाम 'बुध' है।

५१. शुक्र= वह अत्यन्त पवित्र है तथा उसके संग और ध्यान से जीव भी पवित्र हो जाता है एतदर्थ उस परमेश्वर का एक नाम 'शुक्र' है।

५२. शनिश्चर= सब में सहज से स्वाभाविक रूप से प्राप्त है तथा धैर्यवान् है अर्थात् जिसके कार्य बिना किसी प्रकार की घबराहट, बेचैनी तथा अकुलाहट के सहज व स्वभाविक रूप से विधिवत, नियमानुसार होते रहते हैं, इस कारण से उस परमदेव का नाम 'शनिश्चर' भी है।

५३. राहु= उस परमात्मा के स्वभाव में कोई दूसरा पदार्थ संयुक्त अर्थात् जुड़ा हुआ नहीं है। वह दुष्टों को त्यागने वाला है अर्थात् वह दुष्टों को नहीं अपनाता तथा अन्यों को भी दुष्टों तथा दुष्कर्मों से छुड़ाने वाला है, इस कारण वह 'राहु' नाम से प्रख्यात है।

५४. केतु= सब जगत का निवास स्थान होने तथा सब रोगों से रहित रहने के कारण उस प्रभु का नाम 'केतु, है।

५५. यज्ञ= सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता है, सब विद्वानों का पूज्य है। आदि सृष्टि से लेकर अब तक भी समस्त ऋषि-मुनि आदि विद्वानों का पूज्य रहा है और भविष्य में भी रहेगा, इससे उस परमात्मा का नाम 'यज्ञ' है।

५६. होता= जीवों को देने योग्य पदार्थों का दाता होने तथा सृष्टि रूपी यज्ञ के सञ्चालन के लिये विविध पदार्थों की उत्पत्ति रूप आहुति देते रहने के कारण वह ईश्वर 'होता' है।

५७. वन्धु= अपने में सब लोक-लोकान्तरों को (नियम-व्यवस्था में) बांध कर रखता तथा सहोदर भ्राता के समान सहायक है। जैसे भाई भाईयों का सहायक होता है, वैसे ही वह परमेश्वर भी समस्त जीवों की आवश्यकता की सामग्री उत्पन्न कर उनकी सहायता करने और उन वस्तुओं के द्वारा प्राणी मात्र को सुख पहुँचाने के कारण वह परमात्मा 'वन्धु' कहाता है।

५८. पिता= सब का पालक-रक्षक होने, सब का हित साधन करने और सब की उन्नति चाहने के कारण ईश्वर का

एक नाम 'पिता' भी है।

५९. पितामह= सब के पिताओं का पिता होने के कारण उसे 'पितामह' की संज्ञा से भी जाना जाता है।

६०. आचार्य= सत्य आचार का ग्रहण कराने वाला और सब विद्याओं की प्राप्ति का हेतु तथा सब विद्याओं का प्रकाश करने वाला होने से उस परम पावन प्रभु को 'आचार्य' नाम से भी पुकारते हैं।

६१. गुरु= वह सत्य धर्म का प्रतिपादन करने वाला, सकल विद्या अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान का उपदेश आदि सृष्टि में ही मानवों के कल्याणार्थ प्रदान करने वाला होने के कारण वह ईश्वर 'गुरु' नाम से भी जाना जाता है।

६२. अज= 'अज' का अर्थ है अजन्मा अर्थात् वह परमात्मा जन्म नहीं लेता इस लिये उसे 'अज' नाम से भी पुकारते हैं।

६३. अनन्त= उस परमात्मा का कहीं अन्त तथा कोई सीमा आदि नहीं है अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई आदि का उस का कोई परिमाण नहीं है। इस कारण उसे 'अनन्त' कहते हैं।

६४. असीम= उस की कोई सीमा न होने अर्थात् किसी सीमा में घिरा न होने के कारण वह परमात्मा 'असीम' नाम वाला है ।

६५. अनादि= ऐसा कोई समय कभी नहीं था, जब परमात्मा न रहा हो । वह सदा से है अर्थात् इस सृष्टि के आदि काल — प्रारम्भ होने — से पहले भी वर्तमान था और इस सृष्टि से पहली सृष्टियों से पहले भी था । सृष्टि तो प्रवाह से अनादि है अर्थात् प्रत्येक सृष्टि से पहले प्रलय था और प्रत्येक उस प्रलय से पहले भी सृष्टि थी । सृष्टि और प्रलय का यह चक्र अनन्त काल से चला आ रहा है । इस क्रम का कहीं अन्त, कहीं भी समाप्ति नहीं होती । प्रत्येक बार तो सृष्टि का प्रारम्भ होता है, प्रलय का भी होता है अतः प्रत्येक प्रलय और सृष्टि का आदि काल तो होता है परन्तु कभी भी कोई ऐसा अवसर नहीं था, जब सृष्टि पहली ही बार बनी हो । क्यों कि यह क्रम निरन्तर बना रहता है और अनन्त काल से बना चला आ रहा है अतः इसे प्रवाह से अनादि कहते हैं । किन्तु परमात्मा इस बनने - बिगड़ने के चक्र से मुक्त है, एक रस रहता हुआ सदैव वर्तमान रहता है और अनादि

काल में इसी प्रकार वर्तमान है इसलिये उसे 'अनादि' कहते हैं ।

६६. सत्= वह सदा वर्तमान रहता है और उसका स्वरूप भी सदा एक जैसा रहता है, उस में भी कोई परि-वर्तन नहीं होता इसलिये उस परमेश्वर का एक नाम 'सत्' है ।

६७. चित्= स्वयं चेतन स्वरूप तथा सब को चेताने वाला होने के कारण परमात्मा को 'चित्' संज्ञा वाला कहते हैं ।

६८. आनन्द= वह अपने आप में आनन्द स्वरूप है, उसे दुःख नहीं व्यापते । सब मुक्त जीव भी उसमें स्थित होकर आनन्द भोगते हैं । यही कारण है कि वह परमात्मा 'आनन्द' नाम वाला है ।

६९. सच्चिदानन्द= परमात्मा के सत् + चित् + आनन्द इन तीनों नामों के संयुक्त होने से और उसके सत्=सदैव एक रस रहने, चित्=चेतन स्वरूप होने तथा आनन्दमय होने के कारण उस का एकनाम 'सच्चिदानन्द' भी है ।

७०. सच्चिदानन्द स्वरूप= परमात्मा का सच्चिदानन्द नाम क्योंकि उसके सत्-चित् और आनन्द इन तीनों नामों से मिलकर बना है और यह तीनों नाम उस के उन गुणों

का वर्णन करते हैं, जो उसे कहीं अन्यत्र से प्राप्त नहीं हुए अपितु यह उसके स्वाभाविक गुण हैं, जो उसमें स्वयं में स्थित हैं, उसके निज स्वरूप में स्थित हैं तथा उसके स्वरूप के गुणों का अथवा यों कहिये कि उसके गुणात्मक स्वरूप का वर्णन करते हैं इस लिये उस परमेश्वर का नाम 'सच्चिदानन्दस्वरूप' भी है।

७१. नित्य— परमपिता परमात्मा अविनाशी है, उसका कभी नाश नहीं होता। ऐसा कोई समय कभी नहीं आया, जब परमात्मा नहीं था। अब भी वह है और भविष्य में भी ऐसा कोई अवसर नहीं आयगा, जब परमात्मा न रहे। प्रत्येक स्थिति तथा प्रत्येक काल में रहने वाला होने के कारण ही उसका नाम 'नित्य' है।

७२. शुद्ध— ईश्वर स्वयं शुद्ध (पवित्र) है, सब अशुद्धियों अपवित्राओं से पृथक् है। सर्व व्यापक होने के कारण यद्यपि वह गन्दगी के भी प्रत्येक परमाणु में रहता है किन्तु अशरीरी अर्थात् शरीर रहित (निराकार) होने के कारण वह उस गन्दगी से भी लिप्त नहीं होता, उसे वह गन्दगी लग नहीं पाती, वह उसे किसी भी प्रकार से प्रभावित तक नहीं कर पाती। वह गन्दगी में रहकर भी उससे पृथक्, निर्लिप्त और पवित्र है तथा अन्य सब का भी पवित्र (शुद्ध) करने वाला है। इस कारण से उस को

'शुद्ध' नाम से भी जाना जाता है।

७३. बुद्ध— सदा सब को जानने वाला, बुद्धि अर्थात् ज्ञान का भण्डार (ज्ञान स्वरूप) होने के कारण विद्वान् लोग उस परमात्मा को 'बुद्ध' नाम से पुकारते हैं।

७४. मुक्त— सब अशुद्धियों से पृथक् तथा निराकार होने के कारण नाड़ी-नस, जन्म-मृत्यु तथा आध्यात्मिक, आधि-दैविक, आधिभौतिक दुःखों (दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों तापों) से सदा बचा रहने के कारण आप्त जन उस परमपिता को 'मुक्त' संज्ञा से भी जानते हैं।

७५. शुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव— समस्त अशुद्धियों (गन्दगियों) से पृथक् होने, बुद्धितत्व, ज्ञान का भण्डार तथा ज्ञान स्वरूप होने और सभी प्रकार के बन्धनों से रहित होने के कारण पर-मात्मा का 'शुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव' नाम से भी वर्णन किया जाता है। कारण कि यह तीनों गुण उसे कहीं अन्यत्र से उपलब्ध नहीं हुए अपितु यह उसके स्वाभाविक गुण हैं।

७६. निराकार— उसका कोई आकार नहीं है और न कभी शरीर धारण करके वह आकार वाला बनता है। इसलिये उस परमात्मा को 'निराकार' शब्द से भी जान लिया जाता है।

७७. निरञ्जन— वह ईश्वर आकृति, म्लेच्छाचार, दुष्ट कामनाओं

तथा हस्त-पाद-चक्षु आदि सभी ज्ञानेन्द्रियों से पृथक् है। इस कारण से उसकी 'निरञ्जन' संज्ञा है।

७८. गणपति— समस्त जीवों और जड़ पदार्थों की पूर्ण संख्या का स्वामी, अधिपति, पालक और रक्षक होने के कारण वह परमात्मा 'गणपति' संज्ञा वाला है।

७९. गणेश— 'गण' का अर्थ हैं संख्या। इसमें 'ईश' शब्द युक्त कर के 'गणेश' शब्द बनता है। ईश का अर्थ है शासक तथा रचना करने वाला। समस्त संसार के सृष्ट पदार्थों तथा प्राणियों पर शासन करने वाला तथा इन सभी का रचने, निर्माण करने वाला होने के कारण उस परमात्मा को 'गणेश' नाम से वेदादि शास्त्रों ने पुकारा है।

८०. विश्वेश्वर— विश्व जगत् अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि में जो ईश अर्थात् शासक हैं, उन सब के ऊपर और उन सब से श्रेष्ठ होने से वह परमात्मा 'विश्वेश्वर' है।

८१. जगदीश्वर— विश्व जगत् अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि में कहीं भी किसी भी क्षेत्र अथवा देश विशेष में जो शासन कर रहे हैं, उन सब में श्रेष्ठ होने, उन सब के ऊपर भी जिसका शासन है, ऐसा शासक होने और सांसारिक शासकों के शासनों से रहित क्षेत्रों पर तथैव समस्त आत्माओं, अणु परमाणुओं पर भी शासन करने से वह न केवल जगदीश

=जगत्+ईश, संसार का शासक है अपितु जगदीश्वर है।

८२. कूटस्थ— सब व्यवहारों में व्यापक तथा सब व्यवहारों का आधार होकर भी किसी व्यवहार में अपने स्वरूप को नहीं बदलता, इससे उस परमेश्वर की 'कूटस्थ' संज्ञा है।

८३. अद्वैत— परमात्मा के जैसा (शक्तिशाली उसके अनुकूल अथवा प्रतिकूल गुण-कर्म-स्वभाव वाला) दूसरा कोई तत्व न कभी हुआ, न कभी होगा और न वर्तमान काल में ही है इस कारण उसे 'अद्वैत' नाम से भी जाना जाता हैं।

८४. सगुण— सर्वशक्तिमत्ता, सर्वव्यापकता, सर्वज्ञानमयता (सर्वज्ञता) सत्-चित्-आनन्दस्वरूप, निराकार, न्याय-कारी, अनादि, अनन्त, असीम, अजन्मा, अनुपम आदि गुणों के सहित होने से उस परमात्मा को 'सगुण' कहते हैं।

८५. निर्गुण— अपने विरोधी साकारत्व, ससीमता, आदि-अन्त वाले, जन्म-मरण, अविद्या तथा शरीर आदि के बन्धनों से होने वाले सुख-दुःख भोक्ता जीवों तथा जीवेतर जड़ पदार्थों के भी भार, कठोरता, द्रवत्व, जड़त्व आदि गुणों से रहित होने के कारण उस ईश्वर को 'निर्गुण' कहते हैं।

८६. अन्तर्यामि— सब प्राणियों और जड़ पदार्थों के अन्दर व्यापक होने से सबको तत्त्व रूप से भली भाँति जानता और नियम में रखता है अतएव 'अन्तर्यामि' नाम से उसको

चर्चा की जाती है।

८७. धर्मराज— वह धर्म में ही अवस्थित और अधर्म से रहित है तथा धर्म का प्रकाशकर्ता व अधर्म (पाप कार्यों) के समय मन में भय, शंका, लज्जा का सञ्चार कर के मनुष्यों को अधर्म करने से रोकता है, इससे परमात्मा का नाम धर्मराज है।

८८. यम— जीवों को कर्म-फल देने के नियमों की व्यवस्था करने वाला होने और समस्त सृष्ट पदार्थों—सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि को नियमानुसार गति देने वाला होने से वह परमात्मा 'यम' सज्ञा वाला है।

८९. भगवान्— 'भग' का अर्थ है ऐश्वर्य। समस्त ऐश्वर्यों का अधिपति होने के कारण तथा भजने (ध्यान करने) के योग्य होने के कारण परमात्मा का एक नाम 'भगवान्' है

९०. पुरुष— सब जगत् में पूर्ण हो रहा है अर्थात् समस्त चराचर जगत् में पूरी तरह से व्यापक है तथा पूर्ण पुरुषार्थ से युक्त होने के कारण किसी का आश्रय, सहायता आदि न चाहता और न लेता है, इस कारण उसे 'पुरुष' नाम से भी जाना जाता है।

९१. विश्वम्भर— सब का भरण–पोषण करता है अतएव वह परमेश्वर 'विश्वम्भर' कहलाता है।

९२. काल— सृष्टि के सब पदार्थों तथा जीवों की संख्या करता है, इसलिये वह परमेश्वर 'काल' संज्ञक है।

९३. शेष— सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति अर्थात् सृष्टि की नियम व्यवस्था को चला कर उसे स्थिर रखने तथा अन्त को सृष्टि का प्रलय करने में ही वह परमात्मा सम्पूर्णतया नहीं लग जाता। इन सब से भी अधिक होने के कारण उसे 'शेष' संज्ञा दी जाती है।

९४. शंकर— वह सब के लिये कल्याण अर्थात् सुख-शान्ति का करने वाला है। यही कारण है कि उसका नाम 'शंकर' है।

९५. महादेव— वह सब देवों अर्थात् दिव्य पदार्थों तथा दिव्य जनों (विद्वानों) से महान् है और इन सब के लिये भी देव (दिव्यता देने वाला) है। संसार के जड़ और चेतन देवों में जो दिव्यता है, वह सब उसी की देन है अत-एव वह इन सब देवों का देव होने से 'महादेव' नाम से विख्यात है।

९६. स्वयं-भू— वह आप से आप ही है किसी से कभी उत्पन्न नहीं हुआ तथा किसी आश्रय अर्थात् आधार पर ठहरा हुआ भी नहीं है अपितु अपना आधार स्वयं ही है एतदर्थं वेद ने 'स्वयम्भू' कहकर उसका वर्णन किया है।

९७. शम्भू— वह सुख-शान्ति का भण्डार बना हुआ स्थित है और सुख-शान्ति स्वयं उस परमात्मा में ही स्थित है, वही सुख और शान्ति का केन्द्र है, इसी कारण से उसका एक नाम 'शम्भू' है।

६८. प्रजापति— सब मानव और पशु–कीट–पतंग आदि अपनी प्रजाओं का पालक तथा स्वामी होने के कारण उस परमेश्वर का नाम 'प्रजापति' भी है।

६६. कवि— वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेश करने वाला जीवों के कर्मों तथा उनके परिणामों और सृष्टि में अन्य होने वाली विधिवत् क्रान्तियों को जानने वाला अर्थात् क्रान्त-दर्शी तथा वेद रूपी काव्य का अधिपति तथा प्रकट करने वाला होने के कारण वह परमात्मा 'कवि' है।

परमात्मा के नाम स्त्रीलिङ्ग में —

१००. देवी— देव शब्द पहले लिख आये हैं। जितने देव के अर्थ हैं उतने ही 'देवी' शब्द के अर्थ होते हैं। अन्तर केवल लिङ्ग भेद का है। शक्ति शब्द क्योंकि स्त्रीलिङ्ग का है अतः सम्पूर्ण शक्तियों से युक्त व परिपूर्ण होने के कारण परमात्मा का एक नाम 'देवी' भी है।

१०१. शक्ति— सब जगत् के बनाने, उसकी व्यवस्था बनाये रखने तथा सञ्चालन करने और प्रलय करने के अतिरिक्त जीवों को उन के कर्म-फलों के यथा योग्य भोग करवाने की सामर्थ्य से युक्त होने के कारण उस दिव्यताओं के भण्डार प्रभु का नाम 'शक्ति' है।

१०२. श्री— सब विद्वान तथा योगीजन उस परमात्मा का सेवन करते हैं इसलिये उसका नाम 'श्री' है।

१०२. लक्ष्मी— वेदादि सत्य शास्त्रों तथा धार्मिक विद्वान् व योगी-जन का लक्ष्य होने से उस परमात्मा का नाम 'लक्ष्मी' है।

१०४. सरस्वती— सर का अर्थ है विविध ज्ञान। विविध अर्थात् शब्द–अर्थ–सम्बन्ध का यथावत् जानने वाला होने से परमेश्वर का नाम 'सरस्वती' है।

१०५. पृथिवी— अव्यक्त प्रकृति से जगत् बनाकर इसका विस्तार करने वाला होने के कारण उस परमात्मा का नाम 'पृथिवी' है।

१०६. भगवती— भगवान हो की भाँति समस्त भग–समूह अर्थात् ऐश्वर्यों का स्वामी होने के कारण उस परमदेव का नाम 'भगवती' है।

१०७. माता— सब का निर्माण करने अर्थात् उत्पन्न करने वाला होने तथा जीवन निर्माण की आवश्यक सामग्री उत्पन्न करके देने और जीवन–निर्माण की विधि-व्यवस्था सम्बन्धी ज्ञान (आदि.सृष्टि में ही) प्रदान करने के कारण वह परमात्मा 'माता' नाम से भी जाना जाता है।

१०८. मातामही— सब माताओं की माता अर्थात् सब की माताओं तथा गौ–पृथिवी आदि माताओं का भी निर्माता अर्थात् उन की माता भी होने से वह परमात्मा 'मातामही' है।

समाप्त

वैदिक संस्थान, नजीबाबाद के सदस्य बनकर

धर्मप्रचार के कार्य में सहयोग दीजिये।

१— प्रधान संरक्षक

कम से कम १०००) रुपये दान देने वाले संस्थान के प्रधान संरक्षक होते हैं।

२— संरक्षक

कम से कम ५००) रुपये दान देने वाले संस्थान के संरक्षक होते हैं।

३— सहायक

कम से कम २५०) रुपये देने वाले संस्थान के सहायक होते हैं।

टिप्पणी— एक मुष्ट न दे सकने की स्थिति में यह राशियाँ एक वर्ष की अवधि में मासिक या त्रैमासिक करके भी पूरी की जा सकती हैं। इन तीनों श्रेणियों के दानी संस्थान के आजीवन सदस्य होते हैं तथा इन सभी दानी ,महानुभावों के नाम संस्थान के वार्षिक विवरण में प्रकाशित किये जाने का प्रावधान है।

४— वार्षिक दानी

वह महानुभाव होते हैं, जो कम से कम २५) रुपये वार्षिक संस्थान को दान देते हैं।

५— विशेष दानी

१५०) रुपये देने वाले दानी महानुभाव का नाम एक लघु-पुस्तक (ट्रैक्ट) पर प्रकाशित किया जाता है। दानदाता यदि अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति में यह राशि देते हैं तो उस सम्बन्धी की स्मृति पुस्तक पर प्रकाशित कर दी जाती है।

उत्तम विचारों के अध्ययन और प्रचार

संस्थान प्रका

(श्री स्वामी वेदमुनि परिव्रा

१– सृष्टि-विज्ञान और वेद	
२– महामृत्युञ्जय मन्त्र	
३– मनुष्य वन	
४– आदर्श परिवार	
५– एक ही रास्ता	
६– मृग-तृष्णा	,, ,,
७– कर्म-व्यवस्था	५० ,, ,,
८– तीन प्रकार के वन्धन	५० ,, ,,
९– माता-पिताओं से	५० ,, ,,
१०– हिन्दु नहीं आर्य	५० ,, ,,
११– पत्ते पर तेरा निवास	५० ,, ,,
१२– नारी का शील	५० ,, ,,
१३– पथरीली नदी	७५ ,, ,,
१४– सात मर्यादायें	५० ,, ,,
१५– अमृतमय छाया	५० ,, ,,
१६– शिक्षा-पद्धति और छात्र-समस्या	एक रुपया प्रति
१७– आर्य समाज क्या है ?	५० रुपये सैकड़ा
१८– कुछ ज्वलन्त प्रश्न ?	५० ,, ,,
१९– वर्ण जन्म से नहीं, गुण-कर्म से	७५ ,, ,,
२०– धर्म का तत्त्व	५० ,, ,,
२१– ईश्वर नाम मणिमाला	एक रुपया प्रति
२२– भारतीय इतिहास विरोधियों को शास्त्रार्थ निमन्त्रण	१ रुपया ५० पैसे प्रति
२३– सुमन-सञ्चय	१ रुपया ,,